ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

प्रभात की कविताओं में लोक मानस की अभिव्यक्ति

आनन्द पाराशर, शोधार्थी, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
मेल id - anandparashar121@gmail.com
डॉ रामकृष्ण शर्मा, शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रभात का काव्य संसार लोक-चेतना का एक ऐसा अद्भुत संसार है, जहाँ मौखिक परंपरा और उत्तर आधुनिक संवेदना का मिलन होता है। इनकी कविताओं में 'लोक-मानस' केवल एक साहित्यिक विषय नहीं होकर एक प्रतिकारी संस्कृति है जो पूंजीवाद, यांत्रिकता और विस्थापन के विरोध में खड़ी है।प्रभात ने इतिहास की वैकल्पिक दृष्टि सृजना करते हुए अपनी 'लोक गायिकाएँ' कविता के माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि लोक के पास अपना एक समांतर इतिहास है। यह वह इतिहास है जिसे मुख्यधारा के इतिहासकारों ने 'अनाम' और 'साधारण' कहकर त्याग दिया था। लोक मानस ने उन तत्वों को सहेजा है जो रामायणों और महाभारतों की लिखित पोथियों में दर्ज होने से रह गए। यह पाठकों के लिए एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है कि इतिहास केवल शिलालेखों में यानि लिखित रूप में नहीं, अपितु अँधेरे में चक्की पीसती स्त्री के गले में भी सुरक्षित है।

अपनी कविता 'लोक गायक' में कवि ने कला का जनतंत्रीकरण करते हुए कला को प्रदर्शन की वस्तु से ऊपर उठाकर 'सत्य के साक्षात्कार' का माध्यम बनाया है। 'धूल' जैसे साधारण प्रतीकों को 'ओस' में बदलने की सामर्थ्य यदि किसी में हैं तो वो हैं लोक मानस की अभिव्यक्ति में ,यहाँ बंधन शिथिल हो जाते हैं यहां जो श्रमिक है, वही कलाकार है।प्रभात ने आस्था का मानवीकरण अपनी कविता 'लोक देवता' के माध्यम से किया हैं।कवि ने यह सिद्ध किया है कि लोक का धर्म अत्यंत लचीलेपन से युक्त और आत्मीय है। देवता प्रत्येक समस्या में मित्रवत लोक के संग विचरण करते हैं।लोक के घर और परिस्थिति के अनुरूप लोक देवताओं का सृजन हुआ हैं।यह लोक-मानस की उस निश्छलता को व्यंजित करता हैं जो किसी भी संगठित धर्म के पाखंड से मुक्त है।

प्रभात ने विस्थापन के विरुद्ध स्मृति का संघर्ष का चित्रण अपनी 'लोकगीत' और 'लोककथा' जैसी कविताओं में व्यंजित किया हैं।जहां विस्थापन की जो पीड़ा व्यक्त हुई है, वह समकालीन समाज की सबसे भयावह त्रासदी है। महानगरों में रहने वाला मनुष्य 'फर्नीचर' और 'गुलदान' में परिवर्तित हो गया है, किंतु लोक-मानस की गूँज उसे पुनः उसकी मानवीय पहचान दिलाती है।

मूल शब्द - लोक- मानस, कर्मण्यता,लोक देवता,विस्थापन,आत्म-बोध, विस्मृति, सामूहिकता,आस्था,संगम।

लोक' शब्द की व्युत्पत्ति और फैलाव भारतीय वाङ्मय में अत्यंत गहरा है। एक भौगोलिक इकाई या ग्रामीण समाज ही लोक नहीं है, अपितु यह वह सामूहिक चेतना है जो शास्त्रीय और संभ्रांत वर्ग के समानांतर अपनी सहज त्रिवेणी में प्रवाहित है। आधुनिक विश्व परिदृश्य में जब ' उत्तर आधुनिकतावाद,वैश्वीकरण' और 'शहरीकरण' ने मनुष्य को उसकी जड़ों से विछिन्न कर एक यांत्रिक पुतले में परिवर्तित दिया है, ऐसे समय उस आदिम और नैसर्गिक 'लोक-मानस' की पुकार बनकर कवि प्रभात की कविताएँ उभरी हैं। करौली की मिट्टी और वहां के जनजीवन के अनुभवों से संयुक्त होकर प्रभात का काव्य यह सिद्ध करता है कि लोक तत्व केवल पुरातन की कोई शेष स्मृति नहीं है, अपितु वह आज और कल की विसंगतियों के विरुद्ध एक अत्यंत सशक्त प्रतिवादी स्वर है। लोक-मानस एक जड़ अवधारणा नहीं है, अपितु यह एक चेतन, स्पंदित और अनवरत प्रवाहित होने वाली सांस्कृतिक सरिता है। 'लोक' हमेशा से ही हिंदी साहित्य के इतिहास में रचनात्मकता का आधार स्तंभ रहा है, परंतु आधुनिकता के ध्वनि प्रदूषण में लोक की वह मौलिक ध्वनि कहीं दब सी गई थी। करौली की धरा से जुड़े कवि 'प्रभात' ने अपनी कविताओं के माध्यम से उसी गुम हुई मौलिकता को पुनः प्रतिष्ठित किया है। लोक केवल एक बाहरी दृश्य नहीं है उनके काव्य में, अपितु वह कवि की भीतर का अंग है।

सामूहिक अनुभवों, लोक-गाथाओं, विश्वासों और दैनिक संघर्ष' लोक-मानस की अभिव्यक्ति' कहलाते है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी मुख से मुख की परंपरा के माध्यम से हमारे निकट पहुँचे हैं। प्रभात की कविताएँ अत्यधिक विशिष्ट हैं वे लोक को 'म्यूजियम' की सामग्री नहीं बनातीं, अपितु उसे आज

के यांत्रिक युग के सामने एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इनकी कविताओं में लोक-मानस की अभिव्यक्ति के अनेक परिवेश हैं। पहला परिवेश वाचिक परंपरा का है, जहाँ गायन और सृजन किसी लक्ष्य को हासिल करने के लिए नहीं बल्कि अस्तित्व की रक्षा के लिए है। दूसरा परिवेश जहां श्रम और प्रकृति की आत्मा एक है, जहाँ धूल और ओस कविता के अनिवार्य तत्व बनते हैं। तीसरा परिवेश लोक-आस्था का है, जहाँ देवता अब लोक का हैं वह मनुष्य की पहुँच से दूर किसी भव्य मंदिर की मूर्ति में नहीं अपितु खेत-खलिहानों में 'अनगढ़ भाटे' के रूप में स्थापित हैं। चौथा परिवेश विस्थापन और स्मृति का है, जहाँ आधुनिकता के महानगर की कृत्रिमता के बीच भी लोकगीत की एक स्वर मनुष्य को उसकी मौलिकता की स्मरण दिला देता है।

प्रभात की कविता 'लोक गायिकाएँ' में वाचिक इतिहास का निरंतर स्वर मुखरित हुआ हैं। गायन वस्तुत:बिना उद्देश्य के आत्म शांति के लिए रचा जाता हैं। निस्वार्थता लोक-मानस की पहली विशेषता है। लोक गायिकाएँ किसी ख्याति या मंच ,पुरस्कार अथवा अर्थ के लिए गायन नहीं करती हैं। लोग गायिकाओं के लिए गायन जीवन की एक श्वास के समान एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यदि उनके पास श्रोता न भी हों, तो भी उनका गायन नहीं रुकता।वे अपने एकांत को भी संगीत से भर देती हैं।प्रभात यहाँ स्पष्ट करते हैं कि यह लोक-मानस का वह गुण है जहाँ कला प्रदर्शन के लिए नहीं, बल्कि आत्म-शांति और कार्य की थकान मिटाने के लिए है। उन्हें खुशी मिलती है उन्हें आत्म सुख की प्राप्ति होती है,उन्हें स्वयं को प्रकृति और ईश्वर से जोड़ने का एक मुकाम देती है। प्रभात स्पष्ट कहते हैं कि लोक गायिकाएं मनोविनोद और जीवन के सुख को भोगने के लिए गायन करती है इसमें सभी प्रकार से निस्वार्थ का समावेश है। यथा:-

वे इसलिए नहीं गातीं कि गाकर उन्हें कोई मुकाम हासिल करना है
वे सभा में नहीं गा रही होतीं तो चूल्हे के पास बैठकर गा रही होतीं
उन्हें गाने से मतलब है सुनाने से नहीं
इसलिए वे खलिहान में बैठे-बैठे भी गाती हैं
तारों के नीचे सोते-सोते भी

प्रभात की 'लोक गायिकाएँ' कविता हमें कर्मण्यता और अंधेरे में गीत की ज्योति का संदेश देती हैं।जहां श्रम हैं वहां गायन का लोक उद्भव स्वत: गूंजता हैं ये एक-दूसरे के पूरक हैं। गांवों में महिलाएं सुबह जल्दी जागकर चक्की पीसती हैं, पानी भरती हैं और इन कठिन कार्यों के बीच वे जो गीत गाती हैं, वही उनकी शक्ति का संदर्भ बनता है। 'घासलेट की चिमनी' और 'मुँहअँधेरे' जैसे बिंबों के माध्यम से कवि ने उस संघर्षपूर्ण जीवन को चित्रित किया है, जहाँ संगीत ही एकमात्र रोशनी है। उक्त बिंब गांवों की गरीबी और संघर्ष के आयाम को प्रदर्शित करता हैं।ये जिजीविषा को दिखाता है जो अभावों में भी अपने प्रवाह को नहीं छोड़ती। यथा:-

बरसों उन्होंने मुँहअँधेरे जागकर
घासलेट की चिमनी की रोशनी में
अनाज पीसते हुए गाया है
वे लताओं में खिले फूलों के बारे में गाती हैं
वे कन्दराओं में होने वाले प्रसवों के बारे में गाती हैं

लोक-मानस के इतिहासकार रूप में प्रभात अपनी काव्य दृष्टि को पैनी करते हैं अपने हाथों से इतिहास के झरोखे की उस धूल को हटाते है। जहां से निकलती हैं लिखित महाकाव्यों (रामायण और महाभारत) के वे पात्र और वे घटनाएँ जो छूट गईं,जो नहीं लिखी गई हैं उन्हें उल्लेखित करते हैं। लोक-गायक और गायिकाओं के अपने गीत उद्धृत करते हैं। यह लोक मानस का अपना वास्तविक इतिहास है, जो राजाओं की विजय कथाओं के बजाय सामान्य लघु मानव पीड़ा और प्राकृतिक आपदाओं (आँधियों) को अधिक महत्व देता है। यथा:-

वे खेड़ों-गाँव के उजड़ने के बारे में गाती हैं
वे डेरों के जमने के बारे में गाती हैं
वे उस महाभारत को गाती हैं

जो महाभारत में लिखने से रह गया
वे उस रामायण को गाती हैं
जो रामायण में लिखने से रह गई

प्रभात अपनी कविता: 'लोक गायक' मिट्टी की सोंधी महक और सच से साक्षात्कार करवाते दृष्टिपात होते हैं जहां वे शब्द साधारण पर रूपांतरण असाधारण कर देते हैं।प्रभात की अनुसार लोक गायक की कविता की आधारभूमि अर्थात् कच्ची सामग्री उनका स्वयं का जीवन है। वह किसी तत्सम संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग नहीं करता। प्रभात स्पष्टत: कहते हैं कि लोक-मानस 'धूल' जैसे साधारण और उपेक्षित शब्दों को भी अपने कला हुनर से 'ओस' की तरह चमका देता है। लोक गायक की सृजनात्मकता हैं कि वह अपने अनुभव को शब्दों में व्यंजित कर चमक प्रदान करता हैं। यथा:-

सतही तौर पर उसे किसानों और श्रमिकों का कवि कह सकते हैं
उनके जीवन से जो शब्द बनते हैं
प्रायः उन्हीं को काम में लेता है वह कविता रचने के लिए
धूल की तरह साधारण शब्द

उक्त कविता जीवन और मृत्यु का लयबद्ध संगम का तादात्म्य दिखाई देता हैं।वाद्य यंत्र जो लोक संगीत में प्रयुक्त होते हैं इनका भी अपना एक दर्शन है। कवि ने स्पष्टत:उल्लेखित किया है कि 'मृत जानवर की खाल' से लोक गायक का वाद्य यंत्र बनता है। यह लोक-मानस की उस स्वीकार्यता को दर्शाता है जहाँ मृत्यु को भी सृजन के काम में लाया जाता है। जहां मृत्यु जीवन को जोड़ती हैं।जब वह वाद्य गूँजता है, तो उसमें उस जीव की आत्मा और गायक का श्रम दोनों का समावेश होता हैं।चेतन और अचेतन का संगम होता हैं अचेतन का स्पर्श चेतन को अपना अनुभूत होता हैं, फलत: अपनत्व का भाव पोषित होता हैं। यथा:-

उसका विशाल वाद्य घेरा
मृत जानवर की खाल से बनता है
जब वह गूँजता है
पास ही जंगलों में खड़े भैंसे
त्वचा पर स्पर्श का अनुभव करते हैं

अपनी कविता: 'लोक देवता' में कवि आस्था का अद्भुत सैलाब एवं अधिकार व्यंजित करते हैं । सादा जीवन और सादगी वाले देव और देवालय विद्यमान हैं।जहां शास्त्रीय जनमानस में देव उच्च संभ्रांत कुल और भव्य मंदिर में विराजित हैं वहीं लोक-मानस में ईश्वर खुले आसमान के नीचे, धूल और मिट्टी के बीच 'अनगढ़ भाटे' (बेढंगे पत्थर) के रूप में विद्यमान है। प्रभात यहाँ लोक की उस सहज आस्था का चित्रण करते हैं जहाँ गोबर से लीपा चबूतरा ही सबसे पवित्र स्थान है। यहाँ भक्त और भगवान के बीच कोई मध्यस्थ (पुजारी) नहीं है।देवता का स्वरूप भी आम सामान्य आदमीनुमा हैं।लोकदेवता का गौरव चित्रण प्रभात की यहां आम को आम से जुड़ने का खास अनुभव देता हैं। यथा:-

गाँव खेत जंगल से दूर निर्जन में
मिट्टी से निकले किसी अनगढ़ भाटे में
गोबर से लीपे चबूतरे पर
बैठे रहते हैं लोक देवता

ये लोकदेवता जीवनचक्र की छोटी छोटी समस्याओं के समाधानकर्ता के रूप में सामने आते हैं।ये लोक देवता लोक-मानस के लिए केवल मोक्ष देने वाला नहीं, अपितु दैनिक व्यवहार के संकटों में प्रतिपल है समाधान करने वाले हैं। चाहे पालतू जानवरों का दर्द यथा बैल का दर्द हो या किसी को बिच्छू ने काट लिया हो, लोक-मानस सबसे पहले अपने देवता के पास पहुँचता है। यह धर्म का वह रूप है जो अत्यंत व्यावहारिक और मानवीय है।भोलेपन वाला समस्या का तुरंत समाधान लोकदेवता के यहां मिलता हैं।विश्वास और आस्था का अद्भुत संगम व्यक्ति को मनोबल से युक्त बनाता हैं।राजस्थान में ऐसे अनेक लोकदेवता पाबू जी,गोगा जी,हड़बूजी आदि गांव गांव घर घर पूजाएं जाते हैं।इन लोकदेवताओं की संस्कृति ने अनेक नवीन संस्कृतियों को पल्लवित किया हुआ।इनमें जागरण,चोला आदि प्रमुख हैं। यथा:-

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

बैल के दरद का दुख लेकर आते हैं लोग उनके थान पर
कुछ लोग वहीं बैठकर उलाहना देते हैं
तेरे यहाँ बैठे रहने का क्या फायदा है
कुछ लोग धमकी देते हैं
अगर लड़के का बिच्छू अबकी नहीं उतरा तो
तू तेरे और हम हमारे

प्रभात के लोक देवता प्रकृति से कटे हुए नहीं हैं। उनके शरीर पर गिलहरियाँ फुदकती हैं और पक्षी बैठते हैं। वे 'पत्थर के होकर' भी अत्यंत जीवंत हैं क्योंकि वे सबकी सुनते हैं। यह लोक-मानस की वह अवधारणा है जहाँ ईश्वर भी प्रकृति का ही एक अंग है, कोई अलग सत्ता नहीं।यह प्रकल्प हमें सोचने को मजबूर करता हैं कि विशेष और बड़े भी सामान्य और लघु के लिए कितने सहज उपलब्ध हैं।निरीह से निरीह प्राणी हो सबको अधिकार हैं लोक देवता पर,निराशा किसी को नहीं हैं यहां।बस चाहिए विश्वास और अटूट आस्था, यथा:-

गिलहरियाँ उनकी देह पर फुदकती हैं
तोते और कबूतर उनके कंधों पर बैठते हैं
वे बस पत्थर के होकर बैठे रहते हैं
सुनते हुए सबकी

प्रभात की तीखी दृष्टि कविता 'लोककथा' में सच की ठंडी धारा और निराला की प्यास के रूप में प्रकट होती हैं। विस्थापन का दर्द और विस्मृति के बीच लोककथा का भाव व्यंजित होता हैं।महाप्राण निराला कवि प्रभात के यहाँ एक ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भ लेते हैं।कविता की शुरुआत एक उदासी और विस्थापन से होती है। त्रिपाठी जी (निराला) अपनी स्मृति खो चुके हैं और विक्षिप्त अवस्था में हैं। यहाँ निराला का 'अंग्रेजी बोलना' सांस्कृतिक विस्थापन का प्रतीक है। प्यास लगने पर वे कुएँ की ओर जाते हैं, जहाँ 'लोककथा' स्वयं जल खींच रही है।निराला की संघर्षपूर्ण जीवनयात्रा का लोककथा रूप स्थान स्थान प्रचलित हैं।प्रभात ने इसे काव्य सौंदर्य में ढाला हैं। यथा:-

स्मृतियाँ धुंधला गई थीं
सारी छिन गई थी
त्रिपाठी विक्षिप्त हो गए थे
अंग्रेजी बोलने लगे थे हिन्दी के बजाय
सड़क पर फिरा करते थे कि एक साँझ
उन्हें प्यास लगी
वे कुएँ पर चले गए

उक्त कविता में कुएँ पर बैठी 'लोककथा' एक गहरा दार्शनिक प्रश्न करती है। उसके अनुसार मनुष्य केवल वे हैं जो निरंतर गतिमान हैं (सूरज और चाँद)। यह लोक-मानस की वह दृष्टि है जो मनुष्य की पहचान उसके कर्म और उसकी गति से तय करती है। यहाँ लोककथा एक गुरु की भूमिका में है जो महान कवि को भी सोचने पर मजबूर कर देती है।लोककथा गुरु रूप में निराला से पूछती हैं तीसरे कौन हो तुम ?भारतीय साहित्य संस्कृति में संघर्ष की कथाओं को स्थान देना एक अद्भुत जीवन यात्रा को समझदारी से आगे बढ़ाने की प्रेरणा देने वाला हैं। यथा:-

कुएँ पर लोककथा जल खींच रही थी, बोली-
'तुम कौन हो ?'
बोले- 'मैं इनसान हूँ'
'इनसान तो संसार में दो ही हैं
सूरज और चाँद
जो दिन-रात चलते हैं
फिर भी जिन्हें चैन ही नहीं

फुर्सत ही नहीं
तीसरे इनसान तुम कहाँ से आ गए ?'

कविता: 'लोकगीत' – स्मृतियों का पुनरागमन और विस्थापन की पीड़ा को व्यक्त करती हैं।प्रभात की कविता 'लोकगीत' आधुनिक विस्थापन का जीवित दस्तावेज़ है। एक स्त्री जो अब शहर के एक बंद कमरे (बेडरूम) में है, वह आधी रात को एक आवाज़ श्रवण करती है। यह ध्वनि बाहरी शोर नहीं, अपितु उसके भीतर दबी हुई स्मृतियों की गूँज है। 'पानी के बुलबुलों की तरह सितारे' एक अद्भुत बिंब है जो उस स्त्री की मानसिक अवस्था को दर्शाता है।कवि ने मुक्तिबोध की तरह फेंटेसी का सहारा लेते हुए मार्मिक व्यंजना करते हुए आत्मसाक्षात्कार का अपूर्व चित्रण किया हैं। यथा:-

आधी रात के अँधेरे में
वह गीत बजता था धीमे
बिस्तर से विलग हो
आई वह अहाते में
पानी के बुलबुलों की तरह
सितारे अटके थे आकाश में

उक्त कविता में विस्थापित लोक और रिक्शेवाला की करुणता का चित्रण हैं किस भांति एक रिक्शेवाला अपनी परम्पराओं से संबद्ध हैं यहाँ लोक-मानस उसके मोबाइल में जीवित है। दिन भर शहर की सड़कों पर परिश्रम करने वाला वह रिक्शेवाला, रात को अपने मोबाइल पर लोक गीतों के माध्यम से अपनी मिट्टी से जुड़ा रहता है। कवि यहां यह दिखाने का प्रयास करे रहे हैं कि लोक-मानस भौगोलिक रूप से विस्थापित तो हो सकता है, किंतु मन:स्थिति से वह कभी अपनी जड़ों का त्याग नहीं करता हैं। यथा:-

बाहर एक रिक्शेवाला था
अपने रिक्शे में सोया
मोबाइल पर ये गीत सुनता था

कविता पहचान का संकट और आत्म-बोध का परिचय कराती हैं ये खंड मार्मिक हैं। यहां प्रकृति और मनुज का आपसी संगम हो जाता हैं। जहां गांव में मनुज का स्वरूप प्रकृति के पेड़ और फूल से था ।वहीं शहर में मनुष्य गुलदान,फर्नीचर से जुड़ जाता हैं।वह स्त्री महसूस करती है कि वह कभी 'पेड़' थी, 'फूल' थी—अर्थात वह प्रकृति का हिस्सा थी। किंतु अब वह 'फर्नीचर', 'गुलदान' और 'कार की चाबी' जैसी निर्जीव वस्तुओं में परिवर्तित गई है। लोकगीत सुनकर वह 'सिहर' जाती है। यह सिहरन ही लोक-मानस की विजय है, जो एक मशीनीकृत मनुष्य को पुनः संवेदनशील बना देती है। यथा:-

ये वे गीत थे जिन्हें वह खुद गाया करती थी
जब वह पेड़ थी, फूल थी
मगर अब वह महानगर में थी
फर्नीचर थी, गुलदान थी
कार की चाबी थी, ब्रांडेड आटा थी
बरसों बाद सिहर गई वह
चम्पा की ओट में छुपकर खड़े हो सुनते हुए

प्रभात अपनी कविता: 'लोककथा के फूल' में जीवन की सादगी और उत्सव का चित्रांकन करते हैं।छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव 'रहनखोल' के माध्यम से कवि प्रभात लोक-मानस के भौतिक स्वरूप को रेखांकित करते हैं। मिट्टी की दीवारें, फूस की छत और घर की साधारण वस्तुएं जैसे जांता, टुकनी और सूपा—ये केवल निर्जीव वस्तुएं नहीं हैं, बल्कि ये लोक-मानस के संघर्ष और उसकी संस्कृति के साक्ष्य हैं। यथा:-

मिट्टी की दीवारों पर
फूस और बाँस की छत से

जांता, टुकनी, सूपा, सिल
सब ऐसे ही पड़े थे

अभाव में उत्सव का परिवेश और परिवार की सामूहिकता चित्रण प्रभात ने बखूबी किया हैं।हँसना वो भी अभावों के बीच लोक-मानस की सबसे बड़ी विशेषता है— एक परिवार जो रात के खाने के लिए 'मछली और केकड़े' खोज रहा है, वह किसी बड़े संकट में नहीं है, बल्कि वह जीवन का आनंद ले रहा है। सास-ससुर और बहू का मिलकर काम करना और 'रोटी के साथ लगावन' (सब्जी) का प्रबंध करना लोक की उस सामूहिकता को दर्शाता है जहाँ दुःख बँट जाते हैं। कवि जब इस परिवार से मिलता हैं तो उनके आनन्द और सादगीपूर्ण आचरण को वह लोककथा या लोककथा के फूल नाम देता हैं। यथा:-

मछली केकड़े खोज रहा था एक परिवार
सास-ससुर और बहू
रात के खाने में रोटी के साथ लगावन के इन्तजाम में जुटे थे तीनों
हँसे खूब बतियाए मुझसे
भले-बुरे दिन भूल

निष्कर्ष:

प्रभात की कविताएँ करौली के आंचलिक परिवेश से उठकर वैश्विक संवेदना तक गोते लगाती हैं। उन्होंने लोक को 'म्यूजियम' की वस्तु होने से बचाया है और उसे एक जीवंत, गतिशील सत्ता के रूप में स्थापित किया है। 'प्रभात की कविताओं में स्पष्ट उल्लेख हैं कि जब तक लोक-मानस सुरक्षित है, तब तक मानवीय संवेदना और प्रकृति के साथ हमारा संबंध अक्षुण्ण और साधु बना रहेगा। उनका काव्य लोक-संस्कृति के पुनराविष्कार का एक नवीन मार्ग प्रशस्त करता है।उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्रभात की कविताओं में 'लोक-मानस की अभिव्यक्ति' अत्यंत गहरी, मर्मस्पर्शी और बहुआयामी है। उन्होंने लोक को केवल एक सजावट तत्व के रूप में नहीं लिया, अपितु उसे एक 'जीवन-दर्शन' के रूप में स्थापित किया है। उनकी कविताओं में लोक-मानस के निम्नलिखित तत्व प्रमुखता से उभरते हैं:

1. अनाम सृजन: जहाँ कलाकार अपनी पहचान के विपरीत अपनी कला को महत्व देता है।
2. प्रकृति और मनुष्य का अद्वैत दर्शन : जहाँ पशु, पक्षी, देवता और मनुष्य एक ही माने गए
3. स्मृति और विस्थापन: व्यक्ति कितना भी बाहरी हो जाए लोक की प्रासंगिकता और उसकी गूँज उसके भीतर जीवित रहती हैं।
4. गूढ़ सत्यों का प्रत्यक्षीकरण: साधारण शब्दों और प्रतीकों के माध्यम से गूढ़ सत्यों का प्रत्यक्षीकरण ।

प्रभात का काव्य हमें यह सिखाता है कि विकास की इस अंधाधुंध दौड़ में हमें अपने 'लोक' को जीवित रखना होगा, क्योंकि वही हमारी वास्तविक पहचान है। प्रभात ने जो लोक-मानस रचा है, वह वस्तुत:भारतीय संस्कृति की आत्मा का काव्य है।

संदर्भ

1. लोक गायिकाएँ -जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
2. लोक गायक-जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
3. लोक देवता-जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
4. लोककथा-जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
5. लोकगीत-जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
6. लोककथा के फूल-जीवन के दिन : कविता संग्रह, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष 2020
7. अपनों में नहीं रह पाने का गीत कविता संग्रह, साहित्य अकादमी नई दिल्ली, वर्ष 2014
8. सम्पादन राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति डॉ सत्यनारायण मोनोग्राफ राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, वर्ष 2014
9. बखत पत्रिका - अंक पांचवां नवम्बर 2023